ग्रीष्म ऋतु में पौष्टिक चारा उत्पादन

नवीन कुमार एवं बी.आर.सूद
सस्य विज्ञान विभाग, चौ.स.कृ.हि.प्र.कृ.वि., पालमपुर

हिमाचल प्रदेश में लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व पशुपालन है। प्रदेश में लगभग 36 प्रतिशत भू-भाग चरागाहों व घासनियों के अन्तर्गत है जो चारे का प्रमुख साधन है परन्तु इन चरागाहों व घासनियों से चारा केवल वर्षा) ऋतु में ही प्राप्त होता है। गर्मियों के दिनों में पशुओं की उत्पादन क्षमता कम हो जाती है, जिसका मुख्य कारण चारे की कमी है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए चौ.स.कृ.हि.प्र.कृ.वि., पालमपुर ने विभिन्न क्षेत्रों व मौसम के अनुसार चारे व घास की किस्मों को तैयार कर उनके उगाने की विधियों को भी प्रमोदित किया है। ग्रीष्म ऋतु में पशु उत्पादन को बढ़ाने व चारे की पूर्ति के लिए निम्न चारा फसलों को अनुमोदित सिफारिशों के साथ सफलतापूर्वक उगाकर पौष्टिक चारा प्राप्त किया जा सकता है।

निचले व मध्यपर्वतीय क्षेत्रों के लिए

गिनी घास : यह घास गर्मियों के महीनों से लेकर बरसात अन्त तक तीन से चार कटाईयों में 20-35 क्विंटल प्रति बीघा की दर से पौष्टिक चारा प्रदान करती है। अप्रैल-मई के महीनों में खेत को अच्छी तरह तैयार करके पी.जी.जी. - 9 किस्म की 2 कि.ग्रा. बीज प्रति बीघा की दर से 30 सै.मी. की दूरी पर लाइनों में बिजाई करनी चाहिए। बीज अधिक गहरा न डालें क्योंकि इस घास का बीज गहरा जाए तो अंकुरित पौध जमीन से बाहर नहीं आयेगा। बिजाई के समय 2 कि.ग्रा. इफको खाद तथा बिजाई के 34-40 दिनों के बाद 4 कि.ग्रा. यूरिया प्रति बीघा डालें। हर कटाई के बाद 4 कि.ग्रा. यूरिया प्रति बीघा की दर से डालें। 40-50 सैं. मी. ऊंचे पौधे कटाई के लिए उपयुक्त हैं।

मक्की : मुख्य रूप से मक्की को दाने के लिए उगाया जाता है, परन्तु निचले क्षेत्रों में गेहूं की कटाई के बाद व धान की रोपाई से पहले वाले समय में मक्की से 35-40 क्विंटल प्रति बीघा पौष्टिक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। गेहूं की कटाई के बाद खेत को अच्छी तरह तैयार करके अफ्रीकन टाल या पायनिर हाईब्रिडज़ किस्मों के बीज की 4-5 कि.ग्रा. प्रति बीघा की दर से केरा विधि द्वारा बिजाई कर दें। बिजाई के एक बीघा में 7-8 कि.ग्रा. यूरिया व 18-20 कि.ग्रा. सिंगल सुपरफॉस्पफेट (धूड़ा खाद) डालें। जब फसल घुटनों तक हो जाए एक बीघा में तो 7-8 कि.ग्रा. यूरिया डाल दें। पौधों की रोपाई से पहले फसल को हरे चारे के लिए काट लेना चाहिए।

मक्की से चारा व दाना दोनों प्राप्त करना : प्रदेश में मक्की के दाने की फसल किसानों की प्राथमिकता हैं परन्तु कुछ फेरबदल कर एक ही समय में खेत से दाने के साथ हरा चारा भी प्राप्त किया जा सकता है। ऐसी अवस्था में अगर मक्की की बीज दर को सामान्य से दोगुना करके (10 कि.ग्रा. प्रति बीघा), 30 सै.मी. दूरी की लाइनों में बिजाई कर दें, तथा यूरिया खाद की मात्रा 3 कि.ग्रा. प्रति बीघा बढ़ा दें। लगभग 60 दिन के बाद से एक पंक्ति को छोड़ अगली पंक्ति को चारे के लिए काट कर पशुओं के लिए 15-16 क्विंटल प्रति बीघा भरपूर पौष्टिक चारा प्राप्त हो जाता है तथा बाकी बची पंक्तियों से दाने की पूरी औसत उपज प्राप्त की जा सकती है। अतः एक ही खेत से एक ही समय में हरे चारे व दाने की फसल सफलतापूर्वक प्राप्त की जा सकती है।

चरी : चारे की फसल के लिए एम.पी. चरी, हाईब्रिडज़ हाईब्रिड़ किस्मों के बीज की 3.5- 4.5 कि.ग्रा. प्रति बीघा की दर से अप्रैल में खेती को अच्छी तरह तैयार करके छिड़काव द्वारा या 25-30 सैं.मी. दूरी पर लाइनों में बिजाई कर दें। बिजाई के समय 6 किलो यूरिया, 18-20 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्पफेट (धूड़ा खाद) तथा हर कटाई के बाद 6 कि.ग्रा. यूरिया प्रति बीघा डालें। चरी की फसल तीन कटाईयों में 30-35 क्विंटल प्रति बीघा हरा चारा प्रदान करती है।

संकर हाथी घास : खाली पड़ी ज़मीन, खेतों व मेढ़ों पर लगाने के लिए यह एक बहुत ही अच्छी गुणवत्ता वाली बहुवर्षीय घास है तथा 5-6 कटाईयों में 50-60 क्विंटल हरा चारा प्रति बीघा प्रदान करती हैं। उन्नत किस्म एन.

बी.-37 की जड़युक्त कलमों के लिए 40 x 40 सैं.मी. की दूरी पर बरसात में रोपण का उपयुक्त समय है। पूर्ण रूप से विकसित पौधें के लिए 7-8 कि.ग्रा. यूरिया व 18-20 कि.ग्रा. सिंगल सुपरफास्पफेट (एक साल छोड़कर) प्रति बीघा की दर से आवश्यता होती है। घास की हर कटाई के बाद 7-8 कि.ग्रा. यूरिया प्रति बीघा की जरूरत पड़ती है। एक बार लगाने के एक साल बाद आने वाले वर्षों में पहली कटाई ग्रीष्म) ऋतु में (मई-जून) में प्राप्त हो जाती है। तथा अगली कटाइयों में 40-50 दिन के अन्तराल पर अक्तूबर-नवम्बर माह तक हरा चारा प्राप्त होता रहता है।

सिटेरिया घास : प्रदेश के मध्यपर्वतीय क्षेत्रों में इस घास की पूर्ण रूप से स्थापित पी.एस.एस. - 1 व निचले क्षेत्रों में एस. - 92 किस्मों के पौधें से मई से नवम्बर तक चार से पांच कटाईयों में 35-40 क्विंटल प्रति बीघा हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। इस घास का रोपण जड़युक्त कलमों या बीज को छोटे-छोटे गढ़ों में डाल की 40 x 40 सैं.मी. की दूरी पर बरसात के महीनों में सपफलतापूर्वक किया जा सकता है। अच्छी तरह स्थापित होने पर यह बहुवर्षीय घास मई महीने से हरा चारा प्रदान करना शुरू कर देती है। अच्छी उपज के लिए खाद प्रबन्धन संकर हाथी घास के लिए बताए गए परामर्श के अनुसार करें।

उच्च पर्वतीय क्षेत्रों के लिए

प्रदेश के ऊंचे ठण्डे क्षेत्रों में भी ग्रीष्म)तु में उन्नत चारा किस्मों को अनुमोदित सिपफारिशों के साथ उगा कर पौष्टिक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। प्रदेश के किन्नौर, लाहौल स्पीति व भरमौर आदि क्षेत्रों में जहां अत्याध्कि बपर्फवारी के कारण साल में ग्रीष्म)तु में ही केवल एक पफसल संभव है वहां भी उन्नत चारा पफसलों से भरपूर चारा प्राप्त किया जा सकता है, साथ ही पर्याप्त मात्राा में चारे का भंडारण सर्दियों के महीनों के लिए भी संभव है। क्षेत्रों में उन्नत घास व फलीदार चारा फसलों का रोपण घासनियों, पेड़ों के नीचे व बगीचों में पौष्टिक चारे की पूर्ति संभव है।

समूचे क्षेत्रों के लिए अनुमोदित फैस्क्यू घास (हिमा-4) या आर्चड घास (कामेट) का रोपण मार्च-अप्रैल में जड़युक्त कलमों द्वारा या बीज द्वारा (1 कि.ग्रा. प्रति बीघा) में किया जा सकता है तथा अच्छी तरह स्थापित होने पर इन घासों से मई-जून से सितम्बर-अक्तूबर तक 2-3 कटाईयों में 25-30 क्विंटल प्रति बीघा पौष्टिक हरा चारा प्राप्त होता है।

इसके अतिरिक्त क्षेत्रों में फलीदार चारा फसलों जैसे सफेद क्लोवर (पालमपुर कम्पोजिट-1), लाल क्लोवर (पी.आर.सी-3) तथा लुसर्न (आनन्द - 3) का अपना महत्वपूर्ण योगदान है, इन फलीदार चारा फसलों की बिजाई क्रमशः 1 कि.ग्रा., 1 कि.ग्रा. व 1.25 कि. ग्रा. बीज प्रति बीघा की दर से अक्तूबर-नवम्बर में (बर्फ पड़ने से पहले) या मार्च-अप्रैल में (बर्फ पिघलने के साथ) ही करनी चाहिए। 2-3 कटाईयों में पूर्ण रूप से विकसित पौधें से 30-35 क्विंटल प्रति बीघा प्रोटीन से भरपूर हरा चारा प्राप्त होता है।

चारे की मिश्रित खेती

अधिक उपज व संतुलित चारा उत्पादन के लिए घासों व फलीदार चारा फसलों की मिश्रित खेती की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। घासनियों में छोटे-छोटे गढ़े कर उनमें एक के बाद एक गड्ड़े में बारी-बारी से घास व फलीदार चारा फसलों का बीज क्रमशः रूप से डाल दें। अंकुरण व बढ़ौतरी के बाद घास + फलीदार चारा फसलों का एक संपूर्ण संतुलित चारा देने वाला मिश्रण तैयार हो जाता है। पूर्ण रूप से स्थापित पौधें में 10-12 कि.ग्रा. यूरिया व 15-16 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्पफेट (एक साल छोड़कर) प्रति बीघा की दर से डालने पर न केवल अच्छी पैदावार प्राप्त होती है बल्कि चारे की नियमित कटाईयों के बावजूद पौष्टिकता भी बनी रहती है।

इस तरह जलवायु व स्थिति के अनुसार विभिन्न चारा फसलों व उनकी किस्मों का रोपण कर व थोड़ी सी मेहनत व लग्न से ग्रीष्म ऋतु में पशुओं के लिए भरपूर पौष्टिक हरा चारा प्राप्त कर के पशुधन की उत्पादन क्षमता में काफी बढ़ोतरी की जा सकती है।